शिक्षकों को आपस में अकादमिक चर्चाओं में सहयोग हेतु

चर्चा पत्र

माह, फरवरी 2024
नवम वर्ष अंक–09

राज्य परियोजना कार्यालय समग्र शिक्षा, छत्तीसगढ़

विद्यालय का विकास शाला प्रबंध समिति (SMC) एवं समुदाय के सक्रियता पर निर्भर करता हैं। आपने अपने आस-पास की शालाओं को देखा होगा जहां पर शाला प्रबंध समिति तथा समुदाय के सहयोग से बेहतर कार्य हो रहा है। विद्यालय एवं बच्चों के प्रति शाला प्रबंध समिति के समर्पण की चर्चा क्षेत्र में होती हैं। शाला प्रबंध समिति एवं समुदाय विद्यालय में बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दिलाने के लिए संसाधन उपलब्ध कराने में तत्पर हैं। इस माह के चर्चा पत्र के विशेषांक में हम ऐसे ही शाला प्रबंध समिति के कार्यों को स्थान दे रहे हैं। जो अपने कुशल प्रयास से विद्यार्थियों के चहुमुखी विकास हेतु अनुकरणीय कार्य कर रहे हैं।

एजेंडा। हमर सुघ्घर स्कूल

शासकीय प्राथमिक शाला शंकरपाली विकासखण्ड पुसौर जिला रायगढ़

क्षेत्रफल व आबादी के हिसाब से गाँव भले ही छोटा है लेकिन गाँव में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति की सोच बहुत बड़ी है। रायगढ़ जिला मुख्यालय के करीब महानदी के कछार में बसा पुसौर

विकासखण्ड का शंकरपाली गाँव की आबादी बहुत कम है। यहाँ के लोग अपने गाँव के प्राथमिक विद्यालय को सरकारी स्कूल नही बल्कि अपना स्कूल समझते है। अपनी भाषा में कहते है

"हमर सुघ्घर स्कूल" यहाँ के लोगों ने कोई उच्च शिक्षण संस्था से शिक्षा या प्रशिक्षण नही लिया है, लेकिन उनका अनुभव बहुत पुख्ता है। पास के शहर में आते जाते उन्होंने देखा समझा व जाना की जीवन में शिक्षा एवं शिक्षा के लिए अनुकूल वातावरण का होना महत्व रखता है। इनकी शिक्षा के प्रति ऐसी ही जागरूकता ने इन्हें प्रेरित किया। शिक्षिका **श्रीमती ओमकुमारी पटेल** के मार्गदर्शन में शाला प्रबंध समिति के सदस्यों ने शाला के विकास के लिए वातावरण तैयार करने की योजना बनाई। अपने गाँव की शाला में बच्चों के लिए पढ़ने का माहौल तैयार किया। शासन के नियमानुसार स्कूल में शाला विकास समिति के सदस्य तो है। लेकिन गाँव के सभी लोग चाहे महिला हो या पुरुष, छोटे हों या बड़े अपने आप को शाला विकास समिति का सदस्य मानते है। गाँव के लोग स्कूल की प्रत्येक गतिविधियों में भाग लेते है। ग्रामीणों ने अपने गाँव के स्कूल को विद्या का मंदिर मानते है। उन्होंने स्कूल को वास्तविक मंदिर का रुप दिया है। आपस में मिलकर स्कूल में प्रिंट रिच वातावरण तैयार किया है। शाला परिसर में वृक्षारोपण कर बागवानी किया है। स्कूल में आकर्षक रंग बिरंगे फूलों के अलावा मौसमी फल के वृक्ष लगा है। स्कूल के किचन गार्डन से ही बच्चों के लिए मध्यान्ह भोजन के लिए सब्जियां उपलब्ध होती है। शिक्षकों के साथ मिलकर ग्रामीण अपने गाँव के स्कूल में बच्चों की पढ़ाई लिखाई ठीक से हो इसके लिए नियमित बैठक करते हैं। ग्रामीणों के सहयोग से ही स्कूल में विकासखण्ड स्तर के खेल प्रतियोगिता, प्रशिक्षण आदि का आयोजन होता है। जिसमें सभी बढ़ चढ़ कर अपनी सहभागिता देते है। ग्रामीण आपसी सहयोग से अपने गाँव के स्कूल को और बेहतर बनाने के लिए नियमित प्रयासरत है।

एजेंडा 2 पढ़ने के लिए भवन की व्यवस्था

शाला प्रबंध समिति शासकीय प्राथमिक शाला खपरी (सरगांव) विकासखंड पथरिया जिला- मुंगेली

शाला विकास समिति शासकीय प्राथमिक शाला खपरी की अपनी एक अलग कहानी है। स्कूल का भवन अत्यंत जर्जर हो गया था। SMC के जागरूक सदस्यों ने बैठक कर चिंता व्यक्त करते हुए सोचा, समाचार पत्रों में जर्जर शाला भवन की दुर्दशा व होने वाले दुर्घटनाओं की खबर छपती है। कही हमारे गाँव के स्कूल में भी ऐसी घटना न हो जाये। अपनी आशंका को ध्यान में रख कर उच्च अधिकारियों से संपर्क किया। अत्यंत जर्जर होने के कारण विद्यायल भवन को शासन के आदेशानुसार डिस्मेंटल करवा दिया। शाला प्रबंध समिति को यह उम्मीद थी कि बच्चों के लिए शासन शीघ्र नया शाला भवन का निर्माण कराएगी। शासन प्रशासन से अथक प्रयास करने के बाद भी स्कूल भवन की बनाने की शुरुआत तो दूर उसकी नींव तक नही रखी गई। शाला प्रबंध समिति ने ग्रामीणों की एक बैठक आयोजित कर बच्चों के बैठने व उनकी पढ़ाई नियमित जारी रखने के लिए चिंतन किया। ग्राम में ही स्थित एक पुराना भवन को बच्चों के लिए पढ़ने हेतु तैयार करने का निर्णय लिया। ग्रामीणों के सहयोग से भौतिक संसाधन जुटा कर उस पुराने भवन की मरम्मत कर बच्चों के बैठने योग्य बना। एसएमसी के इस अनुकरणीय प्रयास से खपरी के बच्चों के लिए शाला भवन की व्यवस्था हो गई।

एजेंडा 03 प्राथमिक शाला में कम्प्यूटर शिक्षा

शाला प्रबंध समिति शासकीय प्राथमिक शाला बोरतरा विकासखण्ड पलारी जिला बलौदाबाजार भाठापारा

हमारा देश मंगल ग्रह पर पहुँच गया है, संभावना है अब हम शीघ्र ही सूर्य तक पहुंचने वाले है। मंगल व सूर्य पर कदम रखने की कल्पना सिर्फ देश के बड़े बड़े वैज्ञानिक ही करते है ऐसा नही है बल्कि यह बड़ी सोच छोटे-छोटे गांव में रहने वाले ग्रामीणों की होती है। ऐसे ही बड़े तार्किक विचार करने वाले लोग रहते है ग्राम बोरतरा विकासखण्ड पलारी जिला बलौदाबाजार भाठापारा में। यहाँ के पालक एवं शाला प्रबंध समिति की शिक्षा के प्रति जागरुकता इस बात से भी मालूम होती है कि ग्रामीणों ने अपने बच्चों को आधुनिकता से जोड़ने के लिए आपने गाँव के प्राथमिक विद्यालय में कम्प्यूटर उपलब्ध कराया है। शिक्षकों के समन्वय से शाला विकास की सक्रियता की जितनी भी प्रसंशा की जाए कम होगी। शाला प्रबंध समिति ग्राम में विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल सके इसके लिए नियमित मासिक बैठक आयोजन करती है। ग्रामीणों से आवश्यक्तानुसार सहयोग लेकर शाला के लिए भौतिक संसाधन उपलब्ध करती है। SMC के सहयोग से ही शाला में स्मार्ट क्लास रुम है जो बच्चों को पढ़ाई के साथ आधुनिकता से जुड़े रहने के लिए प्रेरित करती है। जन भागीदारी से शाला में स्मार्ट टीवी, कम्प्यूटर, फर्नीचर के साथ साथ प्रिंट रिच तैयार किया गया है जो बच्चों के पढ़ने के लिए अनुकूल वातावरण सृजित करती है।

एजेंडा 04 बच्चों को शाला समय के बाद पढ़ाई

"आमचो स्कूल आमाचो लेका"

शाला प्रबंध समिति शासकीय प्राथमिक शाला माहरापारा भैरमगढ़ विकासखण्ड भैरमगढ़ जिला- बीजापुर

यह एक ऐसे शाला प्रबंध समिति की सच्ची कहानी है। शाला में सहयोग तो दूर विद्यालय आने में डरते थे। इस गाँव के लोगों के जीवकोपार्जन का मुख्य आधार वनोपज है। ग्राम के लोग साल भर अपनी जीविका हेतु पूरे परिवार के साथ जंगल जाते है। पालक भी पढ़े लिखें नही है। इस कारण बच्चों को शाला नही भेजते थे। जो बच्चे शाला आते, उनका भी पढ़ाई से कोई वास्ता नहीं रहता था। यहाँ के शिक्षकों ने इस समस्या को बहुत गंभीरता से लेकर शाला प्रबंध समिति को सक्रिय बनाने के लिए अनूठा प्रयास किया है। जिसका परिणाम है कि यह एस एम सी अपने क्षेत्र के लिये अनुकरणीय कार्य कर रही है। हम बात कर रहें है बस्तर के बीहड़ जंगल के बीच स्थित बीजापुर जिले के माहरापारा गांव के शासकीय प्राथमिक विद्यालय कि शाला प्रबंध समिति की। ग्रामीण अपने ही बच्चों को शिक्षित करना अपना कर्तव्य नही बल्कि सरकारी काम समझते थे। अपने गांव के स्कूल को सरकारी मानते हुए शिक्षा सरकार का काम समझते थे। शिक्षकों ने शाला विकास समिति के कुछ सदस्यों से सम्पर्क किया। वर्तमान में शिक्षा के आवश्यकता व महत्व का बोध कराया। बच्चों को शाला तक लाने के लिए कार्ययोजना बनाया। इसके लिए शाला प्रबंध समिति ने शेष सदस्यों को साथ में लेकर ग्रामीणों से अपने बच्चों को शाला भेजने के लिये अपील किया। नियमित मॉनिटरिंग कर बच्चों की उपस्थिति एवं ठहराव हेतु विशेष ध्यान दिया। अवकाश के दिन या शाला समय के बाद बच्चे अनावश्यक इधर उधर घूमते रहते थे। उन्हें पढ़ाई से जोड़े रखने के लिए ग्राम के पूर्व छात्रों को पढ़ाने की जिम्मेदारी दिया गया। इससे बच्चों में पढ़ने की रुचि स्वतः जागृत होने लगी। गाँव में शिक्षा के प्रति जागरुकता एवं शाला प्रबंध समिति के इस जुझारु प्रयास से अब ग्रामीण अपने गांव के स्कूल को अपनी भाषा में कहते है ।

"आमचो स्कूल आमाचो लेका पढ़े खातिर करबो बड़ठका"

एजेंडा 05 प्रतियोगी परीक्षा के लिए तैयारी

शाला प्रबंध समिति शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय पोटिया विकासखण्ड धमधा जिला दुर्ग

शाला में संसाधनों को उपलब्ध करा देने मात्र से शाला प्रबंध समिति की जिम्मेदारी खत्म नही हो जाती बल्कि साधनों का सही उपयोग हो सके इसको सुनिश्चित करना उनकी बड़ी जिम्मेदारी होती है। संसाधनों का होना बच्चों के कुछ सीखने पढ़ने में उपयोग होने से ही सार्थकता को प्रमाणित करता है। बच्चे संसाधनों का उपयोग कर पाठ्यक्रम को पूरा या परीक्षा पास कर ले तो भी साधन का समुचित उपयोग नही कह सकते। शिक्षक, विद्यार्थियों को उपलब्ध संसाधनों की सहायता से भविष्य के लिए तैयार कर पाते है। तब सही मायने में यही शिक्षा का उद्देश्य है। इस तथ्य की सही समझ दुर्ग जिले के शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला पोटिया के शाला प्रबंध समिति को है। जब इस विद्यालय के शिक्षक **पवन सिंह** ने बच्चों को पढ़ाई के साथ साथ प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी की शुरुआत किया। शाला समय के अतिरिक्त बच्चों के साथ काम करने के जुनून को देख कर ग्रामीणों व शाला प्रबंध समिति के सदस्यों ने माना शिक्षक हमारे बच्चों के भविष्य के लिए समर्पित है। शिक्षक के इसी प्रेरणादायक कार्य से प्रभावित हो कर एस एम सी ने पालकों के साथ बैठक कर बच्चों को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए नियमित शाला भेजने का अनुरोध किया। शाला में स्मार्ट क्लास की व्यवस्था कर बच्चों के शिक्षा के लिए जुट गए। शाला प्रबंध समिति के इस प्रयास से ग्राम के अधिकांश बच्चों का चयन नवोदय विद्यालय, केंद्रीय विद्यालय, सैनिक स्कूल में होने लगा है। इस तरह से एस एम सी की सहायता से पोटिया के बच्चों को भविष्य की प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयार किया जा रहा है।

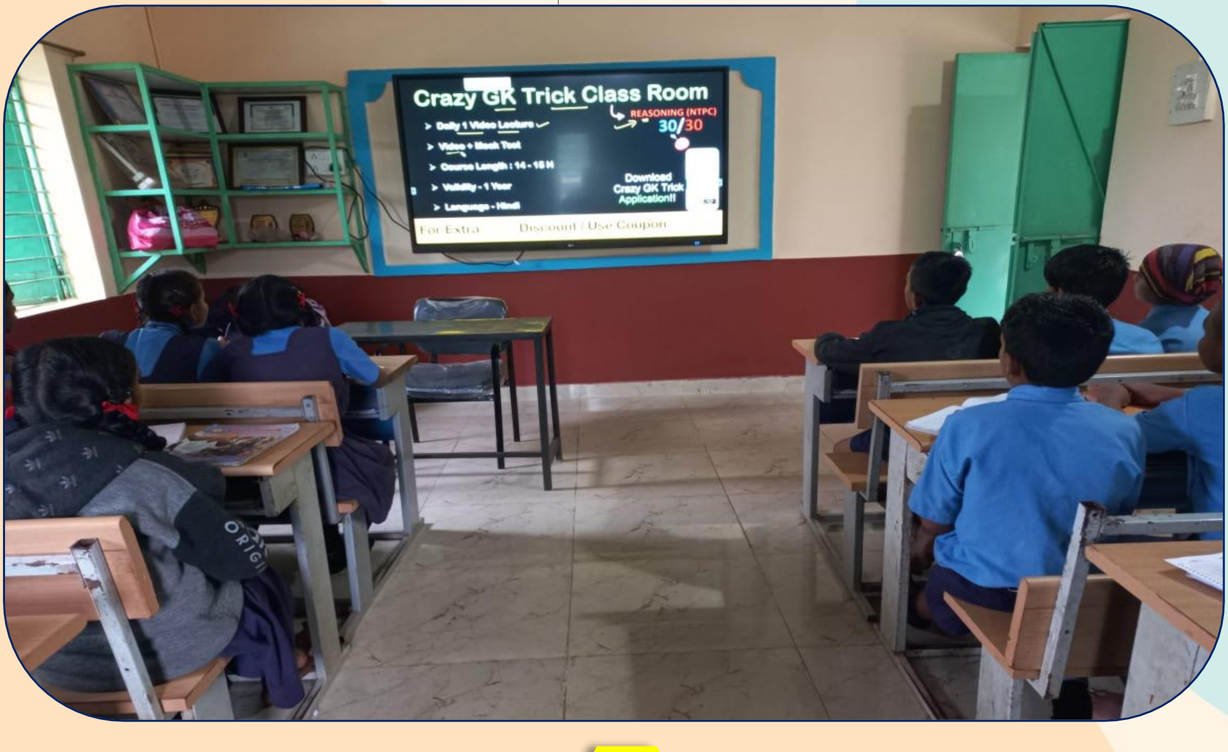

एजेंडा 06 ग्रीन स्कूल क्लीन स्कूल

शाला विकास समिति शासकीय प्राथमिक शाला चनाट विकासखंड बसना जिला महासमुन्द

वृक्ष से ही मनुष्य का जीवन निर्भर है। व्यक्ति की आर्थिक मानसिक समृद्धि का आधार भी वृक्ष है। बढ़ती आबादी की आवश्यकता पूर्ति के लिए पेड़ों की कटाई से वन क्षेत्र कम हुआ है। घटते पेड़ से दिन प्रतिदिन पर्यावरण प्रदूषण बढ़ने लगा है। यही हाल रहा तो वह दिन दूर नही जब धरती से पेड़ पौधे विलुप्त हो जाएंगे। इसी बात से चिंतित शाला विकास समिति शासकीय प्राथमिक शाला चनाट विकासखण्ड बसना जिला महासमुंद के सदस्यों ने शिक्षक **नीलाम्बर नायक** के प्रयास से अपने गाँव के स्कूल को ग्रीन व क्लीन बनाने के लिए एक मुहिम चलाया है। जिसका परिणाम है कि आज विद्यालय किसी बगीचा या गार्डन से कम नही दीखता। चारों तरफ देशी, विदेशी प्रजातियों के वृक्षों से आच्छादित हरियाली, बारहमासी फल -फूल शाला परिसर की खूबसूरती को आकर्षक बना दिया है। शाला विकास समिति बच्चों एवं पालकों को पर्यावरण के प्रति जागरूक रखने के लिए एक अनोखा कार्य किया है। बच्चों व समिति के सदस्यों को जन्मदिन या विशेष अवसर पर सहयोग स्वरुप एक पौधे उपहार में देती है। उसकी रक्षा करने के लिए संकल्पित कराते है। शाला परिसर में लगे पौधे की जिम्मेदारी बच्चे सहित उनके पालकों की ही होती है। समिति के निर्णय अनुसार जिस पालक व बालक ने पेड़ गोद स्वरुप स्वीकार किया है। उस वृक्ष को पानी खाद व सुरक्षा प्रदान कर देख रेख करने की जिम्मेदारी उसकी है। इस तरह से शाला प्रबंध समिति ने शाला परिसर को पर्यावरण सुरक्षा की दृष्टि से **ग्रीन स्कूल क्लीन स्कूल** में बदल कर पर्यावरण को संरक्षित करने की शिक्षा देने में प्रयासरत है।

एजेंडा 07 पूरे गांव को बनाया प्रिंट रिच

शाला प्रबंध समिति शासकीय माध्यमिक शाला टिपनपाल विकास खण्ड छिन्दगढ़, जिला सुकमा।

आपने अनुभव किया होगा कि बच्चे शाला आने से पहले अपने घर पर शुरूआती दिनों में अपने आस-पास की वस्तुओं में छपे हुए चित्र या प्रिंट को पहचान लेते है या प्रयास करते है। किसी दुकान में अपनी पसंद, ना पसंद की सामग्री की सिर्फ उसके रैपर पर छपी प्रिंट को देख कर पहचान व उसे लेने या न लेने का स्वयं निर्णय करते है। यही उनके पढ़ने की रुचि का प्रारंभिक दौर होता है। बच्चे जब शाला में आते है तो अपने पूर्व ज्ञान के आधार पर किताब के प्रिंट को जोड़ कर पढ़ने का प्रयास करते है। बाल मनोवैज्ञानिक का प्रभाव छोटे बच्चों में अधिक होता है। बच्चों के पढ़ने के प्रयास को सही दिशा दी जावें तो वे एक अच्छे स्वतंत्र पाठक बन सकते है। ऐसे ही बाल मनोविज्ञान को समझने वाले शिक्षक **शिवलाल पांडे** प्रधान पाठक ने अपने विद्यालय के ग्राम में प्रिंट रिच वातावरण तैयार करने के लिये शाला विकास समिति के सदस्यों से अनुरोध किया। इस हेतु एस एम सी की बैठक आयोजित कर बताया कि शाला समय के बाद भी बच्चों को पठन कार्य से जोड़े रखने के लिए ग्राम के चौक चौराहे या खाली पड़े दीवालों में पाठ्य सामग्री को प्रिंट कराने से निश्चित ही लाभ हो सकता है। बैठक में उपस्थित सदस्यों ने सार्थक चर्चा कर ग्राम में व शाला परिसर में प्रिंट रिच वातावरण तैयार करने का निर्णय लिया। गांव वालों के सहयोग से अपने अपने घर के दीवालों में बच्चों की किताब के पाठों को लिखने या चित्र बनाने की जिम्मेदारी दी गई। शेष स्थानों पर शाला प्रबंध समिति के लोग प्रिंट रिच हेतु चित्र व सामग्री को प्रिंट कराया। इस तरह से एस एम सी के कार्यों ने बच्चों को पढ़ने में सहायत प्रदान किया। बच्चे शाला आते जाते व छुट्टी के समय में खेल खेल में आपसी सहयोग से पढ़ते है। चित्रों पर चर्चा करते है कहानियों की अपने पालकों को सुनते है। मित्रों के साथ साझा करते है। एस एम सी का यह प्रयास निश्चित ही बच्चों के लिए प्रेरणादायक कार्य है।

एजेंडा 04 पूर्व व्यावसायिक शिक्षा हेतु कार्य

शाला विकास समिति शासकीय प्राथमिक विद्यालय तिलकडीह विकासखण्ड कोटा जिला बिलासपुर

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में बच्चों की जीवन कौशल विकसित करने के लिए स्किल आधारित शिक्षा का प्रावधान किया गया है। शासकीय प्राथमिक शाला तिलकडीह के शिक्षक **बलदाऊ सिंह श्याम** ने अपने विद्यायल के एस एम सी को इसकी जानकारी दिया। एस एम सी के साथ बैठक आयोजित कर बच्चों को भविष्य के लिए तैयार करने उन्हें कुछ न कुछ जीवनोपयोगी हुनर सीखने की योजना बनाया है। इस हेतु विद्यालय प्रबंध समिति ने ग्राम के हुनर जानने वाले व्यक्तियों को खोजने के लिए सर्वे किया। सर्वे से जानकारी प्राप्त हुई कि उनके ही गांव में बहुत से लोग जीवन कौशल के कार्यो में निपुर्ण है। शासन के आदेशानुसार प्रत्येक शनिवार बैग लेस होता है। इसी दिन का चयन कर एस एम सी सदस्यों द्वारा किसी एक हुनर को विद्यालय में जाकर आमंत्रित किया जाता है। स्किल के जानकार व्यक्ति अलग अलग शनिवार को विद्यालय के बच्चों का स्किल डेवलपमेंट कराने हेतु बेहतर कार्य कर रहे हैं। इसके तहत बच्चों ने बागवानी कला, दोना पत्तल, कागज व मिट्टी के खिलौने बनाना, पेंटिंग कशीदाकारी,वेस्ट से बेस्ट सामग्री निर्माण का कार्य सीख गए है। ऐसे व्यवसाय के जानकर जैसे बढई, लुहार, दर्जी, ब्यूटी पार्लर का कार्य जिन्हें शाला में सिखाया जाना संभव नही है। एस एम सी के सदस्य अपने साथ बच्चों को व्यवसायी के कार्य स्थल पर प्रत्यक्ष अवलोकन कराकर हुनर सीखने में मदद करते है। इस तरह से तिलकडीह के बच्चों को जीवन उपयोगी व्यवसायिक शिक्षा प्रदान की जाती है।

एजेंडा 09 पुस्तकालय की व्यवस्था

शाला प्रबंध समिति, शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय नुनेरा, विकास खण्ड पाली जिला कोरबा

बच्चे किसी भी किताब को देख कर उसे उलट पलट कर पढ़ने का प्रयास जरूर करता है। किताब में छपी हुए चित्र को देख कर अपना, या अपने मित्र अथवा परिवार के सदस्यों का इमेजिंग करता है। अपने परिवेश को जोड़ता है। बच्चों की किताबों के प्रति इस रुचि को देख कर शिक्षक **दीपक कुमार कंवर** में अपने शाला प्रबंध समिति के सदस्यों को इसकी जानकारी दिया। उन्होंने समिति के सदस्यों को बताया कि विद्यालय में बच्चों के स्तर की अन्य पत्र पत्रिकाओं की व्यवस्था हो जाये तो निश्चित ही बच्चों के पढ़ने की रुचि बढ़ने लगेगी। शिक्षक की बातों पर गौर करते हुए विद्यालय प्रबंध समिति ने बैठक आयोजित किया। बच्चों को उनके स्तर की किताब उपलब्ध कराने के लिए ग्राम में सभी लोगों से किताब दान कार्यक्रम चलाने का निर्णय लिया। एस एम सी की अपील पर विद्यालय ग्राम के लोगों ने विशेष अवसर जैसे जन्मदिन, सालगिरह बच्चों के लिए कहानी की किताब भेंट करने लगे। इसके अलावा दैनिक समाचार पत्रों में आने वाली पत्रिका को भी स्कूल को भेंट किये। इस तरह से स्कूल में बहुत सुंदर पुस्तकालय की व्यवस्था हो गई। एस एम सी के सदस्य भी नियमित रूप से विद्यालय आकर किताबें पढ़ते है। समय समय पर घर ले जाते है। बच्चों को स्कूल व घर पर किताब पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। पढ़ी हुई कहानियों को शनिवार बैग लैस डे कार्यक्रम में बच्चे सुनाते है। किताब पढ़ने की संस्कृति विकसित करने के लिए प्रत्येक माह जो बच्चा सबसे अधिक किताब पढ़ता हैं उसे एस एम सी द्वारा पुरस्कार दिया जाता हैं। इस तरह से अभिनव कार्य कर शाला प्रबंध समिति ने अपने स्कूल में आकर्षक पुस्तकालय बनाया है।

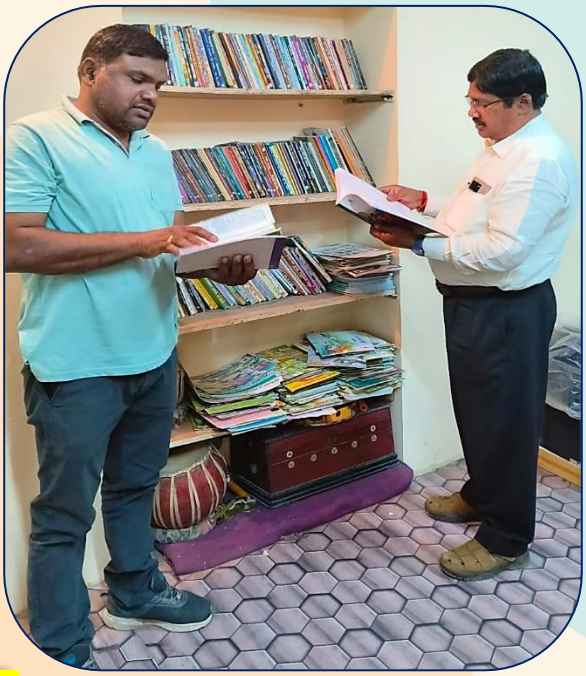

एजेंडा 10 खेल प्रतियोगिता का आयोजन

शाला प्रबंध समिति शासकीय प्राथमिक विद्यालय गिधवा भलेरा विकासखण्ड आरंग जिला रायपुर।

तन का मन से गहरा संबंध होता है। जब हमारा शरीर स्वस्थ रहेगा तो पढ़ने लिखने के कार्य को हम मन लगाकर कर पाएंगे। कोरोना काल ने ऑनलाइन पढ़ाई के नाम पर बच्चे मोबाइल के साथ अधिक जुड़े हैं। मोबाइल के साथ इनका जुड़ाव आज एक समस्या बन गई है। बच्चों के मोबाइल के प्रति लत ने उन्हें शारीरिक खेल से दूर कर दिया है। ऐसे समय में शाला विकास समिति शासकीय प्राथमिक शाला भलेरा विकासखण्ड आरंग के सदस्यों ने आपस में मिलकर समस्या का समाधान निकाला है। विलुप्त होती हमारे प्राचीन ग्रामीण खेल को संरक्षित करने के लिए बच्चों को आऊट डोर खेल का अभ्यास कराते है। इस हेतु शाला के प्रधान पाठक **डोमन लाल डहरिया** के साथ मिलकर बच्चों की खेल सामग्री जुटाते है। शाला परिसर में खेल मैदान तैयार करने में मदद कर खेलों का अभ्यास करवाते है। गांव के बच्चों को प्रतियोगिता स्थल तक लाने ले जाने की व्यवस्था करते है। ग्राम में खेल आयोजन व पुरस्कार की व्यवस्था करते है। बच्चों में खेल के प्रति रुचि जागृत करने के लिए प्रत्येक वर्ष **26 जनवरी** को समस्त ग्रामीणों का खेल प्रतियोगिता आयोजित करते है। इस प्रतियोगिता में गांव का प्रत्येक व्यक्ति चाहे बच्चे हो या बुजुर्ग, महिला हो या पुरुष सभी प्रतियोगिता में भाग लेते है। बच्चे अपने अभिभावकों को खेलते देख कर प्रेरित होते है। वे भी आपस में अपनी शाला या ग्राम में आउट डोर खेल खेलते है। इस तरह से एस एम सी के द्वारा खेल प्रतियोगिता का आयोजन कर बच्चों को खेल में दक्ष कर रहे हैं। बच्चों को शारिरिक व मानसिक रूप से तंदुरुस्त बना रहे हैं। इस तरह से खेल के आयोजन से बच्चों को मोबाइल की लत से दूर रखने का प्रयास कर रहे है।